P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महाभारत आख्यानों–उपाख्यनों से प्राप्त उत्कृष्ट समाज व्यवस्था का संदेश

अनिल कुमार बी. माछी
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
पंचमहल्स आर्ट्स कॉलेज,
देवगढ बरिया, दाहोद,
गुजरात, भारत

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिसमें उस समय का प्रतिबिंब दिखाई देता है। महाभारत के आख्यानों–उपाख्यानों में से हमें महाभारत कालीन एवं इसके पूर्व के समाज रचना के बारे में अत्यंत आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है। क्योंकि आख्यानों में किसी भी व्यक्ति संबंधी एवं इसका समग्रलक्षी विवरण विशालता से किया हुआ दिखाई देता है। जिसके कारण उस समय के राजा, प्रजा, उसका नाम, श्रेष्ठ ऋषिओं का नाम उन्हीं के द्वारा मिलते उपदेश में से समाजोपयोगी आदतों में मददगार होते है।

मुख्य शब्द : व्यास, महाभारत, दुश्यन्तोंपाख्यान, विवाह निरुपण।

प्रस्तावना

दुश्यन्तोपाख्यान में शकुन्तला की संवेदना का वर्णन दिखाई देता है। वो विश्वामित्र–मेनका की पुत्री है, उसे जन्म से ही त्याग दिया था। बाद में वो कण्व के आश्रम में बडी हुए थी। उसने भरत को जन्म दिया था, जिस समय वो दुश्यन्त के दरबार में गई थी तब दुश्यन्त ने उसे श्राप के प्रभाव से पहचानने से इन्कार किया। दुश्यन्त कहता है कि – आपके साथ धर्म, अर्थ एवं काम, ऐसे किसी विषय में मेरा वैवाहिक संबंध हुआ था ऐसा मुझे याद नहीं है। दुश्यन्त की ऐसी वाणी सुनकर शकुन्तला लज्जाशील होकर स्तंब्ध हो गई। दुश्यन्त कहता है की – तेरे गर्भ में से जिस बालक ने जन्म लिया है वो मेरा पुत्र है की नही वह मुझे मालूम नहीं है। तेरी बात पे कौन विश्वास करेगा। क्योंकि ज्यादातर स्त्रियाँ बहुत सारी बाते झूठ़ बोलती है। ऐसी अयोग्य बाते यहां कहने से तुझे लज्जा नहीं हुई। हे दुष्ट तपस्विनी तू यहाँ से चली जा। इससे ज्ञात होता है कि आज के बहुत सारे समाज ऐसे है जिसमें यही घटना घटित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

महाभारत मे समाज व्यवस्था और विवाह संस्कारो का अभ्यास कराना है।

विवाह निरूपण

दुश्यन्तोपाख्यान में आठ प्रकार के विवाह की चर्चा की है। इसमें ब्रह्म, दैव, आर्श, प्रजापत्य, असुर, राक्षसी, गांन्धर्व एवं पिशाच है। इसमें से पहले चार प्रकार के विवाह ब्राह्मण के लिए श्रेष्ठ है। पहेले छः प्रकार के विवाह क्षत्रियों के लिये धर्मानुकुल है। वैश्य एवं शूद्व के लिए असुर विवाह धर्मयुक्त है। महाभारत के दुश्यन्तोपाख्यान में विवाह निरूपण आता है। विवाह संस्था की स्थापना महाकाव्यकाल के बहुत पूर्व से ही हो चुकी थी। वैदिककाल में विवाह एक अत्यन्त पवित्र एवं उच्च संस्कार समझा जाता था। मनु तथा अन्य स्मृतियों में ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात् विवाह का विधान किया जाता था। स्वयं महाभारत में अनेक स्थानों पर विवाह संस्था का उल्लेख हुआ है। जिस आश्रम में पुत्र–पत्नी का भरण तथा पारायण हो उसे श्रेष्ठत्तम आश्रम कहा गया है।

महाभारत में आठ प्रकारों के विवाहों के उल्लेख किये गए है। ब्रह्मदेव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस तथा विशाच दुश्यन्त ने शकुन्तला के साथ गंधर्व विवाह किया था।

ब्राह्मविवाह

इस विवाह में कन्या तथा एसके अभिभावकों की स्वीकृति शामिल रहती है। माता–पिता द्वारा वर के शील–स्वभाव, विद्या, कुल एवं प्रतिष्ठा आदि की जांच करने के पश्चात् उसे कन्या प्रदान की जाती थी। ब्राह्मणों में इसी विवाह का प्रचलन था, इसलिए इसे ब्राह्मविवाह कहते थे।

स्वयंवर

कुछ एक आचार्यो ने स्वयंवर को ब्राह्मविवाह के समकक्ष बताया है। क्षत्रियों में स्वयंवर विवाह को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। ब्राह्म विवाह तथा स्वयंवर विवाह में यह अन्तर है कि स्यंवर विवाह में कन्या की इच्छा प्रमुख होती है। स्वयंवर विवाह के कई भेद है।

दैव विवाह

इसमें अग्नि को साक्षी मानकर यज्ञ किया जाता था। यज्ञ के उपरांत युवक तथा युवती विवाह सूत्र में बंध जाते थे।

आर्श विवाह

इस प्रथा में संक्षिप्त रस्मों के साथ विवाह संपन्न किया जाता था। कुछ विद्वानों का मत है कि इस विवाह प्रणाली में वर गाय–बैल का एक जोड़ा कन्या पक्ष को प्रदान करता है। परन्तु मनु ने इस मत का खंडन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में भी गाय–बैल के प्रदान की बात को अमान्य क़रार दिया गया है।

प्राजापत्य विवाह

प्रजापति (जो प्रजा अथवा संतान का पालन करे) पिता का पर्याय है। इस विवाह परिपाटी में वर–वधू की इच्छा गौण और माता–पिता की इच्छा प्रधान होती थी। इस विवाह पद्धति में माता–पिता अपनी संतानों के लिए वर–वधू की तलाश करते थे। यज्ञशाला में अनेक लोंगो की उपस्थिति में वर–वधू का पाणिग्रहण होता था।

असुर विवाह

जैसे कि नाम से स्पस्ट है, सह बेसुरा हिन स्तर का विवाह माना जाता है। इस विवाह में वर–वधू के चुनाव का निर्णय माता–पिता लेते थे, और इसमें पैसे का लेन–देन चलता था। राजा शल्य ने अपनी बहिन माद्री का महाराज पांडु के साथ धन, ज़ेवर तथा अन्य उपहार लेने के बाद तय किया था। बाईबल के अनुसार जेकब का 'लबान' की दों लड़कियों के साथ विवाह, जेकब द्वारा लबान को चौदह वर्षो तक अपनी सेवायें देने के बाद ही संभव हो पाया था। आजकल के वे विवाह जिनमें दहेज, वर पक्ष से पैसे लेन–देन की भूमिका रहती है, आसुर विवाह के दायरें में आयेंगे।

गांधर्व विवाह

अपने परिवार को विश्वास में लिए बिना, जब युवक तथा युवती अपनी विवाह संबंध जोड़ लेते हैं, तो यह रिश्ता गांधर्व विवाह कहलाता है। अंग्रेजी में इसे 'लव–मैरिज' कहते है। शकुन्तला और दुश्यन्त का विवाह गांधर्व विवाह था।

राक्षस विवाह

किसी कन्या की इच्छा का जाने बिना, अपहरण कर उसके साथ विवाह रचाना राक्षस विवाह कहा जाता है। काशीराज की कन्याओं का भीष्म द्वारा अपहरण और तत्पश्चात् सत्यवती–पुत्र विचित्रवीर्य के साथ उनके विवाह की गणना इस कोटी में होगी।

पैशाच विवाह

सोती हुई, पागल अथवा नशे में उन्मत्त कन्या को दूषित करना अत्यन्त घृणित कार्य माना जाता था। इस प्रकार के विवाह को पैशाच विवाह कहा जाता है।

कन्यादान का महत्त्व

महाभारत के आरण्यक पर्व में सावित्री पाख्यान आता है, जिसमें कन्यादान का महत्व समझाया गया है। कन्यादान ये सभी माता–पिता के लिए सबसे बड़ा दान है। कन्यादान करके वो अपनी पुत्री का सबसे बड़ा दान करते है। कन्यादान न करनेवाला पिता निन्दनीय माना जाता है। वो माता–पिता के जीवन का सबसे ज्यादा आन्नद का विषय है। महाभारत में भी कन्यादान के विषय में चर्चा की गई है।

मानवजीवन की करूणता

यह संसार में मनुष्य अपने कर्म के आधीन जन्म धारण करते है, और फिर अपना समग्र जीवन सुख–दुःख में व्यतीत करते है। विधि के लेख को कोई बदल नही सकता। कर्म का बंधन तो छोटे तिनके से लेकर ब्रह्मा तक सभी को होता है। नलराजा पराक्रमी, दानवीर, धनवीर होने के बावजूद कितनी यातनाओं को भोगना पड़ा था, यह भी एक विधि की वक्रता कही जा सकती है। जिसका तन मात्र अलंकारो से आवृत्त रहता हो, उसे पहनने के लिए कुछ भी नही मिलता एसी परिस्थिति हो इससे बड़ी मानवजीवन की करूणता क्या हो। पांडव भी राजकुमार थे, राजभवन में रहने के बावजूद उन्हें वनमें भटककर जीवन व्यतीत करना पड़ता है, नलराजा जैसी हालत पांडवों की भी हुई थी, नलराजा की तरह प्रयत्नो के बाद अपना राज्य और पुत्र प्राप्त किये थे।

निकर्ष

यह संसार में मनुष्य अपने कर्म के आधीन जन्म धारण करते है, और फिर अपना समग्र जीवन सुख–दुःख में व्यतीत करते है। विधि के लेख को कोई बदल नही सकता। कर्म का बंधन तो छोटे तिनके से लेकर ब्रह्मा तक सभी को होता है। नलराजा पराक्रमी, दानवीर,धनवीर हाने के बावजूद कितनी यातनाओं को भोगना पड़ा था, यह भी एक विधि की वक्रता कही जा सकती है। जिसका तन मात्र अलंकारों से आवृत्त रहता हो, उसे पहनने के लिए कुछ भी नही मिलता ऐसी परिस्थिती हो इससे बड़ी मानवजीवन की करूणता क्या हो। पांडव भी राजकुमार थे, राजभवन में रहने के बावजूद उन्हें वनमें भटककर जीवन व्यतीत करना पड़ता है, नलराजा जैसी हालत पांडवो की भी हुई थी, नलराजा की तरह प्रयत्नों के बाद अपना राज्य और पुत्र प्राप्त किये थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Bannerji, Himani. The dark side of the nation: Essays on multiculturalism, nationalism and gender. Canadian Scholars' Press, 2000.

Boodhoo, Sarita. Kanya dan: the why's of Hindu marriage rituals. Mauritius Bhojpuri Institute, 1993.

Ganguli, Kisari Mohan, and John B. Hare. "The Mahabharata of Krishna-Dwaipayana Vyasa Translated into English Prose Adi Parva (First Parva, or First Book)." (1992).

Sharma, Shweta. Hindu Vivah Sanskar_Ek Sanskrtik Vishleshan Vartman Prasangikta Ke Sandarbh Mein. Diss. 2012.

Tripathi, B. "Kalidasa's Abhijnana Shakuntalam, IX-edition." Ratan Prakashan, Mandi Agra (1991).

Van Buitenen, Johannes Adrianus Bernardus, Johannes Adrianus Bernardus Buitenen, and James L. Fitzgerald, eds. The Mahabharata, volume 1: book 1: the book of the beginning. University of Chicago Press, 1973.